पर्यटन
और
संग्रहालय

डा. प्रभात कुमार सिंघल
(*पूर्व ज्वाईन्ट डायरेक्टर*)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
राजस्थान सरकार, कोटा, राजस्थान, भारत

PRAYATAN AUR SANGRAHAAYA

Copyright © : Dr. Prabhat Kumar Singhal
Publishing Rights ℗ : VSRD Academic Publishing
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

ISBN-13: 978-93-91462-28-4
FIRST EDITION, AUGUST 2021, INDIA

Printed & Published by:
VSRD Academic Publishing
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

Disclaimer: The author(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Authors or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

Printed & Bound in India

VSRD ACADEMIC PUBLISHING
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

REGISTERED OFFICE
154, Tezabmill Campus, Anwarganj, KANPUR – 208003 (UP) (IN)
Mb: 98999 36803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

MARKETING OFFICE
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH)(IN)
Mb: 99561 27040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

बाल मुकुंद ओझा
पूर्व ज्वाइंट डायरेक्टर,

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग,
जयपुर, राजस्थान

प्राक्कथन

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल द्वारा 'पर्यटन और संग्रहालय' शीर्षक से लिखित पुस्तक देशवासियों विशेषकर युवा पीढ़ी को संग्रहालय देखने के लिए प्रेरित करेगी। देश की समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत से आमजन को अवगत कराने में संग्रहालयों का अहम् योगदान है। संग्रहालय अब पर्यटन के महत्वपूर्ण केंद्र भी बन गये हैं। संग्रहालयों को देखने के लिए लोग देश के कोने – कोने से चलकर आते हैं।

भारत समृद्ध लोक कला, दस्तकारी, वास्तुकला, सुंदरता, संस्कृति, परंपराओं और ऐतिहासिक अतीत के अनुपम खजाने के रूप में देश

और दुनियां में विख्यात है। हमारे देश ने महाभारत और रामायणकालीन सभ्यता सहित हजारों साल पुराने अवशेषों और कलाकृतियों को बखूबी संभाल कर रखा गया है। भारत पर मुगलों और अंग्रेजों सहित अनेक जातियों और शासकों ने हजारों हजार वर्षों तक राज किया है। इन शासकों ने भारत में अपनी –अपनी मुद्रा, पहनावा, हथियार, रीति–रिवाज, रहन–सहन, औजार आदि प्रचलित किये जिनके बारे में जानने के लिए आज हर कोई लालायित रहता है। इसी वजह से भारत के लगभग सभी प्रदेशों में संग्रहालय स्थापित किये गए हैं ताकि पर्यटक और इतिहास प्रेमी भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परम्पराओं एवं महत्व के बारे में जान सकें।

संग्रहालय सामान्य रूप से उस स्थान विशेष को कहते है जहाँ एक या अनेकानेक ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, विलक्षण, वैज्ञानिक, प्राकृतिक, सार्वजनिक विरासत और पर्यावरण के साथ कला.कौशल संबंधी वस्तुओं का संग्रह हो। किसी भी देश की समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराने में संग्रहालयों की अहम भूमिका होती है। मनुष्य को अपने वैभवशाली अतीत के बारे में जानने की उत्कंठा और अभिलाषा रहती है। पृथ्वी पर मानव के अभ्युदय के साथ अनेकानेक घटनाएं घटित हुई हैं। रहन–सहन, खानपान से लेकर पृथ्वी और नभ की समूची गतिविधियां हमारे जन जीवन को दिग्दर्शित करती हैं। मानव जीवन की इन्हीं बहुरंगी गतिविधियों को एक स्थान पर संग्रहित कर हम अपने अतीत में झांकते हैं और तदनुरूप अपनी जीवन यात्रा को आगे बढ़ाते हैं। संग्रहालय समाज में सामाजिक.सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों की स्थापना में योगदान देते हैं और विभिन्न संस्कृतियों, राष्ट्रीय परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत के अध्ययन को सुनिश्चित करने का कार्य भी करते हैं।

संग्रहालयों में हमारे देश की कला और पुरावस्तुओं का बेहतरीन, दुर्लभ और अपार भंडार है। अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद के अनुसार संग्रहालय सांस्कृतिक आदान–प्रदान, संस्कृतियों के संवर्धन और लोगों के बीच आपसी समझ, सहयोग और शांति का विकास करने का महत्वपूर्ण साधन हैं। विकासशील समाज में संग्रहालयों की भूमिका के प्रति जन जागरूकता को बढ़ाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय परिषद 1992 से प्रत्येक वर्ष एक विषय का चयन कर जनसामान्य को संग्रहालय विशेषज्ञों से मिलाने एवं संग्रहालय की चुनौतियों से अवगत कराने के लिए स्रोत सामग्री विकसित करती है। संग्रहालयों को राष्ट्रीय संग्रहालय, प्रान्तीय संग्रहालय, स्थानीय संग्रहालय, संरक्षकों द्वारा संचालित संग्रहालय, व्यतिगत संग्रहालय, स्वायत्तशाषी संस्थाओं द्वारा संचालित संग्रहालय के रूप में विभक्त कर सकते हैं। वर्तमान में देश में 12 राष्ट्रीय संग्रहालय और 4 संग्रहालयों को राष्ट्रीय महत्व का घोषित किया गया हैं। देश के विख्यात संग्रहालयों में राष्ट्रीय संग्रहालय नयी दिल्ली, सालारजंग संग्रहालय हैदराबाद, राष्ट्रीय रेलवे संग्रहालय, सरदार पटेल संग्रहालय अहमदाबाद, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान संग्रहालय आदि के नाम लिए जा सकते हैं। पूरे देश में छोटे– मोटे मिलाकर सैंकड़ों की संख्या में संग्रहालय हैं जो अपने–अपने क्षेत्रों की विविध विशेषताओं को समाहित किये हुए हैं। इनमें बहुत से संग्रहालय हमारी आन, बान और शान के प्रतीक हैं।

भारत में संग्रहालयों का इतिहास काफी पुराना है जब 17वीं एवं 18वीं शताब्दी में यूरोप के कई देशों में संग्रहालय स्थापित किये जा रहे थे उसी दौरान भारत में भी विरासत की सुरक्षा को देखते हुए सन 1773 में सर विलियम जोन्स ने रॉयल एशियाटिक सोसायटी की कोलकाता में स्थापना की गई थी। सोसायटी ने वर्ष 1814 में भारत का प्रथम संग्रहालय स्थापित किया जिसे आज भारतीय

संग्रहालय कोलकाता कहा जाता हैं। भारत में ऐसा संग्रहालय पहली बार बना और एशिया प्रशांत क्षेत्र में सबसे विशाल संग्रहालय है। यह विश्व के सबसे विशाल संग्रहालय स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन से भी पुराना है। कोलकाता में संग्रहालय की स्थापना न केवल अन्य संग्रहालयों अपितु राष्ट्रीय महत्व के कई संस्थानों के लिए आदर्श बन गई। भारत में 19वीं शताब्दी संग्रहालय आन्दोलन का महत्वपूर्ण समय था जब न केवल ब्रिटिश शासकों ने अपितु देशी रियासतों द्वारा भी पुरातत्व विभाग की स्थापना कर संग्रहालय स्थापित किये गए।

वर्तमान में संसार के कई महान नगर अपने श्रेष्ठ संग्रहालयों के कारण विश्व भर में जाने जाते हैं। देशी एवं विदेशी पर्यटकों के साथ–साथ इतिहास, कला एवं विज्ञान के विद्यार्थी, शिक्षक एवं जनसाधारण भी अपने जीवन में संग्रहालयों का भ्रमण एवं अवलोकन अवश्य करते हैं। विश्व भर के अनेक देशों से एक करोड़ से अधिक पर्यटक प्रति वर्ष भारत आते हैं। विदेशी पर्यटक भारत की आय में 27 बिलियन अमरीकी डॉलर का योगदान करते हैं। यह योगदान भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 6.88 प्रतिशत का होता है। प्रत्येक विदेशी पर्यटक भारत में एक–दो अथवा कुछ संग्रहालयों का अवलकोन अवश्य करता है। इस कारण संग्रहालय विदेशी मुद्रा अर्जित करने के सशक्त एवं विश्वसनीय स्रोत बनते जा रहे हैं। राजस्थान में प्रतिवर्ष लगभग 15 लाख विदेशी एवं 4 करोड़ स्वदेशी पर्यटक आते हैं। इन पर्यटकों की सुविधा के लिए पूरे राज्य में सरकारी क्षेत्र में 18 संग्रहालय स्थापित किए गए हैं। अनेक निजी संस्थाएं एवं व्यक्ति एवं भी संग्रहालयों का संचालन करते हैं। पुस्तक में इन संग्रहालयों में संगृहित सामग्री के साथ–साथ उनकी विशेषताओं को भी समाहित करने का प्रयास किया गया है।

आशा की जाती है लेखक की यह पुस्तक संग्रहालयों के प्रति रुचि

जागृत करने और देश में पर्यटन को बढ़ावा देने में एक प्रामाणिक और उपयोगी दस्तावेज साबित होगी। मैं पुस्तक की सफलता की कामना करते हुए लेखक को उनके श्रमसाध्य कार्य के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

बाल मुकुंद ओझा

डी–32 मॉडल टाउन, मालवीय नगर

जयपुर, राजस्थान

मोबाइल 9414441218 / 8949519406

लेखकीय

अनादिकाल से वर्तमान समय तक के भारत के इतिहास, सभ्यता और संस्कृति के दर्शन करना, जानना और समझना है तो संग्रहालय एकदम सही एवं उपयुक्त पर्यटन स्थल हैं। इसी महत्ती उद्देश्य को ध्यान में रख कर अमूनन हर राज्य में संग्रहालयों की स्थापना की गई है। यूं तो इन्हें जानने के लिए अनेक श्रोत उपलब्ध हैं परन्तु संग्रहालय आभासीय, जीवंत और दृश्यात्मक संग्रह से पर्यटकों के दिमाग में स्थाई प्रभाव छोड़ते हैं। कुछ ओपन–एयर म्यूजियम, वर्चुअल म्यूजियम हैं जो इंटरनेट के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रूप में मौजूद हैं। निजी संग्रहालयों ने सार्वजनिक प्रदर्शनियों का नया मार्ग खोला है। संग्रहालय इतिहास की जानकारी तो देते ही हैं जबकि बहुत से संग्रहालय किसी खास स्थान के विषय में विस्तृत जानकारी के उद्देश्य को पूरा करने के लिए बनाए गए हैं।

आज इतिहास, सभ्यता, परम्परा और संस्कृति के साथ–साथ प्राकृतिक, वानिकी, वन्यजीव, समुंद्री जीव, मानव विज्ञान, कृषि, वाणिज्य, संचार साधन, विज्ञान विकास, जीवाश्म, अंतरिक्ष, भू–गर्भ, रक्षा सम्बन्धित विभाग, स्मारक जैसे प्रमुख विषयों के साथ–साथ विभिन्न अन्य विषयों पर देश में करीब एक हजार संग्रहालय पर्यटन विकास की धुरी बन गए हैं। देश के कोने– कोने से देशवासी ही नहीं वरन भारत आने वाले विदेशी मेहमान भी इन्हें देख कर अचंभित और गौरवान्वित होते हैं। भारत में पुरातात्विक अवशेषों को संग्रहित करने की जरूरत सर्वप्रथम 1796 ई. में बंगाल की एशियाटिक सोसायटी द्वारा महसूस की गई और 1814 ई. में प्रथम भारतीय संग्रहालय, कोलकाता में स्थापित किया गया। संस्कृति विभाग के अधीन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, राज्यों के

पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, भारतीय विज्ञान परिषद, स्वायत्तशाशी संस्थाओं, के साथ–साथ निजी स्तर पर संग्रहालयों का संचालन और प्रबन्ध किया जाता है।

इस विषय पर पुस्तक लिखने की प्रेरणा और मार्गदर्शन के लिए मैं अनुज कुमार कुच्छल सीनियर सेक्शन इंजीनियर, भारतीय रेलवे, कोटा मंडल एवं प्राक्कथन लिखने के लिए बाल मुकुंद ओझा लेखक एवं पूर्व जॉइंट डायरेक्टर, डी.आई.पी.आर. जयपुर राजस्थान का तहेदिल से आभार ज्ञापित करता हूं। कोटा राजकीय संग्रहालय के अधीक्षक उमराव सिंह सहित विभिन्न संग्रहालयों के प्रभारी अधिकारियों का भी आभारी हूँ जिन्होंने मौलिक सामग्री उपलब्ध करा कर अपना सहयोग प्रदान किया। मेरे मित्र परम कीर्ति शरन देहरादून, वरिष्ठ पत्रकार चंद्रकांत शर्मा मुंबई, वरिष्ठ पत्रकार विमल पाठक लखनऊ, जगदीश केडिया हैदराबाद, वरिष्ठ लेखक ललित गर्ग नई दिल्ली, अतुल गोयल अंबाला, मोहन लाल श्रीमाली एवं वरिष्ठ पत्रकार वीरेंद्र कुमार श्रीवास्तव उदयपुर, इतिहासविद डॉ. एच.सी.जैन एवं फिरोज अहमद कोटा, वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार रमेश धमोरा झुंझुनू का भी हृदय के गहन तम तल से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने विभिन्न संग्रहालयों की जानकारी उपलब्ध करवा कर अप्रतिम सहयोग प्रदान किया।

मै डॉ. दीपक कुमार श्रीवास्तव संभागीय अधीक्षक, राजकीय सार्वजनिक मंडल पुस्तकालय, कोटा का भी आभारी हूँ जिन्होंने न केवल सन्दर्भ सामग्री उपलब्ध कराई वरन पुस्तक प्रकाशित कराने में अपना सहयोग प्रदान किया। बूंदी कन्या महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य प्रमोद कुमार सिंघल, एडवोकेट एवं लेखक अख्तर खान 'अकेला', वरिष्ठ पत्रकार के.डी. अब्बासी के प्रति तहेदिल से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके सुझावों और सहयोग का लाभ मुझे प्राप्त हुआ। पुस्तक के लिए कम्प्यूटर, टाइप आदि सुविधाएं

उपलब्ध कराने के लिए श्रीमती तकसीम बानू एवं पुस्तक सेटिंग के लिए पत्रकार सलीमुद्दीन काजी द्वारा प्रदत्त सहयोग के लिए इनका साधुवाद ज्ञापित करता हूं।

भारत के संग्रहालयों पर आधारित यह पुस्तक पाठकों को प्रमुख संग्रहालयों के बारे में जानकारी दे कर पर्यटन को प्रोत्साहित करेगी ऐसा विश्वास करता हूँ। पाठकों के सुझावों का इंतजार रहेगा।

शुभकामनाओं सहित !

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
सम्पर्क मो.9928076040

अनुक्रम

(1) आंध्रप्रदेश 1-7

(2) दिल्ली..8-21

(3) गुजरात..22-30

(4) हरियाणा..31-38

(5) हिमाचल प्रदेश..39-44

(6) केरल 45-52

(7) कर्नाटक 53-59

(8) मध्यप्रदेश..60-71

(9) महाराष्ट्र..72-78

(10) ओडिशा..79-81

(11) पश्चिम बंगाल 82-87

(12) राजस्थान 88-120

(13) तमिलनाडु 121-125

(14) उत्तरप्रदेश..126-136

(15) उत्तराखंड..137-139

(16) विविध संग्रहालय..140-158

(17) संदर्भ 159-161